गुप्तकाल में शिक्षा की स्थिति : एक अध्ययन

निरंजन कुमार

सारांश

प्राचीन भारत में शिक्षा के इतिहास में गुप्तकाल का महत्त्वपूर्ण महत्व था। इस काल में क्रमशः ब्राह्मण, जैन तथा बौद्ध शिक्षण संस्थाओं का विकास हुआ। साथ ही गुरुकुल आश्रम व्यवस्था को भी इस काल में प्रतिष्ठा मिली। गुप्त शासन ब्राह्मण आचार्यों को अग्रहार के रूप में गाँव दान में देते थे। विज्ञान एवं तकनीक का विकास भी इस काल में हुआ।

भूमिका:

भारतीय समाज में प्राचीन काल से शिक्षा का विशेष महत्व था। ज्ञान अथवा विद्या मानव को कर्म और आचरण से दिव्य कर देता है। वैदिक काल में ऐसे ज्ञानी व्यक्ति को सर्वोच्च प्रतिष्ठा थी। ऋग्वेद के गायत्री मंत्र में भी ज्ञान को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है।[1] शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि स्वाध्याय और प्रवचन से मानव सुसंस्कृत होता है। विद्या के बिना मानव जीवन का व्यक्तित्व संकुचित और बोझिल हो जाता है। यानि अज्ञानता अंधकार के सदृश है।[2] छांदोग्य उपनिषद् में कहा गया है, कि अक्षर को जानने और न जाननेवालों, दोनों कर्म करते हैं किन्तु विद्या की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को विशेष सम्मान मिलता है।[3]

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से हुई है जिसका अर्थ सीखना और सिखाना है। शिक्षा में वह सब कुछ निहित है जो हम समाज में रहकर सीखते हैं। शिक्षा शब्द का प्रयोग अक्सर तीन रूपों में किया जाता है- 1. ज्ञान, 2. पाठ्यचर्या का एक विषय, 3. व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया। इनमें शिक्षा का तीसरा अर्थ ही अधिक व्यावहारिक प्रतीत होता है। समाज में रहकर व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है, उसी के परिणामस्वरूप वह स्वयं को पाशविक प्रवृत्तियों से ऊँचा उठाता है और सभ्य एवं सामाजिक प्राणी बनने की इच्छा रखता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक मार्गदर्शन प्राप्त करता है। शिक्षा विद्यालय की चहारदिवारी में चलने वाली प्रक्रिया ही नहीं वरन यह समाज में अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।[4]

शिक्षा से मनुष्य को जीवन संबंधी सिद्धान्तों और आचरणों को समझने में आसानी होती है। उसका मन शिक्षा से परिष्कृत होता है। इसलिए शिक्षा को 'अप्रतिम' माना गया है।[5] विद्याहीन मनुष्य को पशुवत् कहा गया है।[6] शिक्षा की सार्थकता इसी में है कि वह मनुष्य को संतुलित और श्रेष्ठ जीवन प्रदान करे। मनुष्य का आत्मिक विकास, सांसारिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति, गुण-अवगुण को परखने की शक्ति तथा उचित-अनुचित के विश्लेषण की वृत्ति शिक्षा से ही संभव रही है।

गुप्तकाल में शिक्षा चरमोत्कर्ष पर था।

शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध-गया

साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से स्पष्ट है कि कुषाणों ने जिस शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक चेतना की शुरुआत की, उसका निखार गुप्तकाल में परिलक्षित हुआ। इस काल में ब्राह्मण जैन तथा बौद्ध अपनी-अपनी शिक्षण व्यवस्था कायम की। आचार्यों के खास आश्रम होते थे, जिन्हें ब्रह्मचारी ब्राह्मण विद्यालय के नाम से जाना जाता था। गुप्त राजा ऐसे ब्राह्मण आचार्यों के अग्रहार के रूप में गाँ दान दिया करते थे।[7] अग्रहार वाले गाँव में शिक्षा संगठित किये जाने का प्रमाण कलिंग नरेश उमा वर्मन के अभिलेख में मिलता है। अग्रहार देने का विवरण समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त, कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त के अभिलेखों में भी मिलता है। अतः धनी-मानी व्यक्तियों और गुप्त राजा के सहयोग से गुरुकुल चलाये जाते थे। ऐसे गुरुकुलों का विवरण कालिदास के नाटकों में भी है।[8]

प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुल में देने की परम्परा थी।[9] गुरुकुल में अध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी होते थे। गुरु और शिष्य की परम्परा का अनमोल स्वरूप गुरुकुल में ही देने को मिलता है।[10] उपनिषद् में 'गुरु' को 'आचार्य' कहकर सम्बोधित किया जाता था। कृष्ण और बलराम ने सन्दीपनि मुनि के आश्रम में शिक्षा ग्रहण की थी।[11] कच ने शुक्राचार्य के कुल में विद्यार्जन किया था।[12] महाकाव्यों में गुरुकुलों का संदर्भ मिलता है, जो शिक्षा और विद्या के विख्यात अधि ष्ठान थे। भारद्वाज और बाल्मीकि के आश्रम उच्च कोटि के गुरुकुलों में से थे।[13] कालिदास ने गुरु-शिष्य के पारस्परिक सम्बन्ध को 'गुरुवो गुरुप्रियम' कहा है।[14]

गुरुकुल अथवा आचार्य-कुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करने की प्रथा प्राचीन काल में बराबर चलती रही। चन्द्रगुप्त मौर्य तक्षशिला में चाणक्य के सान्ध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण की थी। बौद्ध ग्रंथों से भी ब्राह्मण आचार्यों के कुलों का विवरण मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि उस काल में लोग गुरुकुलों में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। चम्पा निवासी दिशाप्रमुख आचार्य के आश्रम में पाँच सौ छात्र शिक्षा ग्रहण करते थे। कोशल के सुनेत्त और सेल उस काल के अत्यन्त विख्यात आचार्य थे।[15] मिथिला का ब्रह्मायु वैदुष्य ब्राह्मण अनेकानेक शिष्यों का आचार्य था जिसके अन्तेवासी भी उसी कोटि के विद्वान थे।[16]

गुप्तकाल में भी गुरुकुल की शिक्षा निर्बाध रूप से चलती रही। ब्राह्मण आचार्यों के निवास विद्यार्जन के प्रधान केन्द्र थे। गुप्त अभिलेखों से विदित होता है कि आचार्य ब्राह्मणों को ग्राम दान में दिए जाते थे। आचार्य देवशर्मा का ब्रह्मपूरक ग्राम दान में प्रदान किया गया था।[17] कालिदास के ग्रंथों में अनेक ऐसे आश्रमों का उल्लेख मिलता है जहाँ बौद्धिक उत्कर्ष के निमित्त लोग जाते थे और विभिन्न विषयों में पारंगत होते थे। बाण ने हर्षचरित् में स्वयं लिखा है कि वह विद्या प्राप्ति के निमित अनेक वर्षों तक गुरु के आश्रम में रहा था।

ग्यारहवीं सदी का लेखक अलबीरूनी ने भी गुरुकुल का उल्लेख किया है। इस संदर्भ में उसने वर्णन किया है कि गुरु की सेवा में शिष्य निरन्तर लगे रहते थे।[18] मध्यकालीन अनेक लेखकों ने भी गुरुकुल की परिपाटी समाज में थी इसका उल्लेख किया है।[19] विद्यार्थी अत्यन्त निष्ठा-भाव से गुरुकुल के विभिन्न नियमों का पालन करता था तथा अपनी सच्चरित्रता और सदाचरण से गुरुकुल की मर्यादा को उन्नत करने

का प्रयास करता था। प्राचीन काल में आचार्य की कोई निश्चित आय नहीं थी। शिष्यों द्वारा भिक्षाटन में लाया गया अन्न तथा दान-दक्षिणा में प्राप्त ध न ही आचार्य की आय थी। निश्चय ही यह आय बहुत अल्प थी। ब्राह्मण आचार्य अत्यन्त संतोषी और निस्पृह प्रकृति का होता था, इसलिए वह प्राय: धन की माँग नहीं करता था। शिक्षा प्रदान करना वह अपना कर्त्तव्य मानता था। बौद्ध काल में कुछ राजाओं और श्रेष्ठियों के अध्येता पुत्रों ने आचार्य को थोड़ा-बहुत दानादि देना प्रारंभ किया। तक्षशिला के आचार्यों को कभी-कभी एक-एक हजार मुद्राएँ दक्षिणा में प्राप्त हो जाते थे।[20]

प्राचीन काल में अनेकानेक विषयों की शिक्षा छात्रों को दी जाती थी। द्विजों के लिए वेद का अध्ययन आवश्यक था। वेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, ज्योतिष विज्ञान, नक्षक विद्या, विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी।[21] वात्स्यायन ने 64 विद्याओं का वर्णन किया है। ह्वेनसांग ने व्याकरण, शिल्प आयुर्वेद, तर्क आत्मविद्या का उल्लेख किया है।[22]

गुप्तकाल में नारी शिक्षा का भी प्रभाव था। इसकी पुष्टि विभिन्न स्रोतों के माध्यम से पता चलता है। वात्स्यायन के कामसूत्र से विदित होता है कि नारी शिक्षा राजघराने, सामन्त परिवार और सम्पन्न लोगों के यहाँ ही सीमित थी। यहाँ भी नारी शिक्षा मात्र उसके विशिष्ट आचरण, नारी कर्त्तव्यों और गृहस्थ जीवन के ज्ञान तक ही सीमित थी। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नारियों का प्रवेश न्यूनतम देखा जाता है। व्यावसायिक और शिल्प शिक्षा का काम श्रेणी और निगम किया करती थी। इसी तरह शिक्षा के व्यावसायीकरण के बावजूद नारी और निचले वर्ण में शिक्षा के गुणवत्ता में गिरावट देखने को मिलता है। ऐसे गुप्तकाल से पूर्व वैदिक काल में नारी-शिक्षा का विशेष महत्व था। ऋग्वेद से अनेक ऋषिकाओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है; जिन्होंने अनेकानेक मंत्रों और ऋचाओं की रचना की थी। लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी, अपाला, काक्षीवती, घोषा, सिफल आदि विदुषी नारियाँ इनमें अधिक प्रसिद्ध है। उपनिषदों में गार्गी का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। इसने जनक की राजसभा में याज्ञवल्क्य को अपने ज्ञान से पराजित की थी। महाभारत में सुलमा और द्रौपदी का नाम विदुषी नारियों में प्रतिष्ठित है। उत्तरा ने अर्जुन से संगीत और नृत्य की शिक्षा प्राप्त की थी।[23]

सम्राट् समुद्रगुप्त अनेकानेक विषयों में गुरु तथा वीणावादन में तुम्बरू और नारद जैसे देवताओं से भी अधिक पारंगत था।[24] उसकी उपाधि 'कविराज' की थी। स्कन्दगुप्त भी विद्वान और गुणी सम्राट था।[25] राजाओं के लिए कालिदास का कथन है, ''शास्त्र को नेत्र बनाकर ही वे अपने प्रयत्नों के सूक्ष्म परिणाम को उसके चरितार्थ होने के पूर्व ही देख सकते थे।[26] दंडी ने पाठ्य विषयों की सूची इस प्रकार दी है-सभी लिपियाँ, भाषाएँ, वेद, वेदांग, उपवेद, काव्य, नाट्य-कला, धर्मशास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, तर्कशास्त्र, मीमांसा, राजनीति, संगीत, छन्द, रसशास्त्र, युद्धविद्या, चौर्थ विद्या आदि प्रमुख है।[27] साथ ही गुप्तकाल में ही कुमारगुप्त के शासन के समय नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। यहाँ पालि, दर्शनशास्त्र, पुरातत्व की पढ़ाई होती थी। ह्वेनसांग ने इस विश्वविद्यालय के विषय में बताया है कि इसका प्रधान कुलपति शीलभद्र था, जो अनेक विषयों में पारंगत था।[28] उसके पहले इस विश्वविद्यालय का कुलपति ध

र्मपाल था। यहाँ चीन, कोरिया, तिब्बत, तुखार अनेक देशों के विदेशी यात्री शिक्षा ग्रहण के लिए आते थे। एक अध्यापक पर 9 या 10 विद्यार्थियों को पढ़ाने की जिम्मेवारी होती थी। कालांतर में चलकर विक्रमशिला विश्वविद्यालय[29], वलमी विश्वविद्यालय[30] के अतिरिक्त अनेक शिक्षाकेन्द्र में विभिन्न विषयों की पढ़ाई होती थी। यानि गुप्तकाल के पूर्व और बाद में भी शिक्षा की स्थिति कमोवेश अच्छी थी। किसी भी क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति का होना यह प्रकृति का शाश्वत नियम है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुप्तकाल में शिक्षा की स्थिति बेहतर थी। वैदिक कालों से लेकर गुप्तकाल तक शिक्षा की स्थिति बेहतर थी। वैदिक कालों से लेकर गुप्तकाल तक शिक्षा की स्थितियों को देखने के बाद स्पष्ट है कि एक लम्बा सफर शैक्षणिक वातावरण का था। वैदिक काल में गुरुकुल की परम्परा से लेकर विश्वविद्यालय की स्थापना के भी प्रमाण की पुष्टि है। इस काल में संस्कृत भाषा और साहित्य का भी विकास हुआ। समुद्रगुप्त के समय में कांची शिक्षा केन्द्र को विकसित होने का अवसर मिला। यानि गुप्तकाल में शिक्षा उत्कृष्टता और प्रतिष्ठा की श्रेणी में था।

संदर्भ

1. ऋग्वेद, 1.164.66
2. विष्णु पुराण, 6.5.62 अन्धं तम इवाज्ञानम्
3. छांदोग्य उपनिषद्, 1.1.10
4. योजना, 5.10, 1969
5. ब्रह्माण्ड पुराण, 1.4.15, ज्ञानेनाप्रतिमेन
6. नीतिशतक, 16, विद्याहीनः पशुः
7. त्रिपाठी, रमाशंकर : हिस्ट्री ऑफ एंशियण्ट इण्डिया, पृ.-268
8. कालिदास : अभिज्ञानशाकुंतलम्
9. तैत्तिरीय उपनिषद, 1.11
10. पूर्वोक्त, 1.11
11. विष्णु पुराण, 3.10.12
12. मत्स्य पुराण, 26.1
13. रामायण, 6.123.51, 2.55.9-11
14. रघुवंश, 3.29
15. अंगुत्तर निकाय, पृ.-371
16. मज्झिम निकाय, 2, 133-34
17. फ्लीट, कार्पस इंस्क्रिप्शन्स इंडिकेरम्, भाग-3, अभिलेख 56
18. मिश्र, जयशंकर : ग्यारहवीं सदी का भारत, वाराणसी, 1968, पृ.-168
19. स्मृतिचन्द्रिका, 2, पृ.-195
20. जातक, 1, पृ.-272, 285; 4, पृ.-50, 234
21. छांदोग्य उपनिषद, 7.1
22. बील. एस. : 'बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ बेस्टर्न वर्ल्ड', अनुवाद ह्वेनसांग, चीन यात्री, पृ. -122
23. महाभारत
24. प्रयाग-प्रशस्ति, निशितविदग्धमतिगान्धर्वललितैब्रींडितत्रिदशपति गुरुतुम्बरूनारदादेः
25. भीतरी-स्तम्भ-लेख
26. रघुवंश, 4.13
27. दशकुमारचरित्, पृ.-21-22
28. वाटर्स, 2, पृ.-180

♦ ♦ ♦